सहयोगी बनने के साथ-साथ सहजयोगी बनो

आज अमृतवेले जब मैं बाबा के पास सूक्ष्मवतन में पहुँची तो बाबा बहुत-बहुत मुस्कराते हुए दृष्टि देते मिलन मना रहे थे, जब मैं नज़दीक जाके पहुँची तो बापदादा बोले, आओ बच्ची - क्या सन्देश लाई हो! तो मैंने सुनाया बाबा आपने जो बहुत समय पहले कहा था कि आपके पास ऐसी आत्मायें आयेंगी, जो सेवा में सहयोगी बनेंगी। तो आज ऐसी सहयोगी आत्मायें जो आयी हैं उनकी याद और सन्देश लेकर आयी हूँ। तो बाबा बहुत मीठा मुस्कराये, ऐसे लग रहा था, जैसे बाबा वतन से ही आप सभी को देख रहे हैं। हम भी एक सेकेण्ड के लिए बिल्कुल साइलेन्स हो गई। उसके बाद फिर बाबा ने कहा कि बच्ची, यह सभी जो ''सहयोगी आत्मायें'' आयी हैं, इन्हों को कहना कि आपके मीठे ते मीठे, प्यारे ते प्यारे पिता परमात्मा ने कहा है कि सहयोगी तो आप हो, यह सहयोग का एक कदम बढ़ाके आप यहाँ पहुँचे हो लेकिन अगर आगे बढ़ना है तो एक कदम से तो आगे नहीं बढ़ सकते हैं, दूसरा कदम मिलाना पड़ता है तब आगे बढ़ते हैं। तो पहला कदम है - सहयोगी बनना और दूसरा कदम है - सहजयोगी बनना।

तो बाबा ने कहा कि बच्चों को कहना कि कदम आगे बढ़ाना माना आगे बढ़ना। उसके बाद बाबा ने कहा अच्छा, बाबा के घर में बच्चे आये हैं, आपने इन्हों की क्या खातिरी की है? मैंने कहा बाबा खातिरी तो बहुत की है, आध्यात्मिक भी की, खाने-पीने की भी की, दादी ने सौगात भी सबको दी है। तो बाबा ने कहा देखो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आये हैं। कोई भी पूछेगा कहाँ गये थे तो कहेंगे ईश्वरीय विश्व विद्यालय में गये थे। तो बाबा ने कहा विद्यालय में जो भी स्टूडेन्ट आता है वह कुछ बनके ही निकलता है, ऐसे ही नहीं निकलता है। तो इन्हों को आपने क्या बनाया? तो मैं चुप रही, देखती रही - बाबा क्या चाहता है, क्या कहता है, ऐसे ही मुस्कराती रही।

तो बाबा ने कहा – मैं इन सभी एक-एक बच्चे को आज राजा बनाता हूँ, सभी राजा बन गये। मैंने कहा बाबा यह राजा कैसे बन गये? तो बाबा ने कहा कि आप बच्चों ने इन्हें स्वराज्य का ज्ञान दिया है ना! यह जो शरीर है, कर्मइन्द्रियाँ हैं मन, बुद्धि, संस्कार हैं, इनके ऊपर आत्मा राजा है। तो बाबा ने कहा कि आपने इन सभी

को राजा नहीं बनाया ? और इन्हों को आसन पर नहीं बिठाया ? मैं तो मुस्कराती रही। तो बाबा ने कहा कि बच्चों से पूछना कि आप स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चों के पास बैठने के लिए कौन सा आसन है ? आत्मा राजा का आसन है यह भ्रकुटी अकाल तख्त, जहाँ स्वराज्य अधिकारी आत्मा निवास करती है और जो तख्त पर बैठता है उसे तिलक भी देते हैं, वह तिलक भी मस्तक पर दिया जाता है। यह मस्तक स्मृति की निशानी है। तो यह स्मृति का तिलक इनको लगाओ कि मैं आत्मा हूँ, मैं अकाल तख्त निवासी हूँ। साथ-साथ बाबा ने कहा कि इन बच्चों को ताज भी पहनाओ। डबल ताजधारी बनाओ। एक ताज है ''विश्व-परिवर्तन के ज़िम्मेवारी का ताज'' और दूसरा ताज है ''पवित्रता का।'' तो बाबा ने कहा कि बाप की तरफ से इन्हों को यह ताज, तिलक और तख्त गिफ्ट देना। तो बापदादा की यह गिफ्ट सभी सम्भालकर रखना।

फिर बाबा ने कहा इन बच्चों को कहना कि आप कोई-न-कोई प्रोग्राम बनाकर आपस में मिलते रहना और बाबा ने जो विश्व-परिवर्तन की जिम्मेवारी का ताज पहनाया है, उसका प्रैक्टिकल प्लान बनाना और प्रैक्टिकल में यह करके बाबा को रिटर्न देना। ऐसे बाबा ने सन्देश दिया और सबको यादप्यार दी, फिर तो मैं बाबा से छुट्टी लेके साकार वतन में पहुँच गई। ओम् शान्ति।